https://www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

अंग दर्द सिंड्रोम

के संस्करण 2016

३.काम्प्लेक्स रीजनल पेन सिंड्रोम टाइप १: (पर्यायवाची: रिफ्लेक्स सिम्पैथेटिक डिस्ट्रॉफी,लोकलाईज़ेड इडिओपथिक मस्कुलोस्केलेटल पेन सिंड्रोम)

३.१.यह क्या होता है?

यह अंगों में होने वाला तीव्र दर्द होता है जिसका कोई कारण ज्ञात नहीं होता व् जिसके साथ त्वचा में परिवर्तन भी देखे जाते हैं।

३.२. यह कितनी आम बीमारी है?

यह कितनी आम बीमारी है इस बारे में ठीक से जानकारी नहीं है।यह बीमारी किशोरों में(औसतन १२ वर्ष की आयु में) खास कर लड़कियों में पायी जाती है।

३.३.इस बीमारी के प्रमुख लक्षण क्या होते हैं?

आमतौर से अंगों में लम्बे समय से अत्यधिक दर्द होता है जिसकी तीव्रता बढ़ती रहती है और विभिन्न दवाओं का असर नहीं होता।अधिकतर समय के साथ प्रभावित अंग को इस्तेमाल करने में भी तकलीफ महसूस होने लगती है।
हलके स्पर्श जैसी अनुभूतियाँ जो आमतौर से दुखदाई नहीं होती वह भी इन बच्चों को अधिक दुखदाई महसूस होती हैं,इसे "ऐलोडाईनिआ"कहते हैं।
यह लक्षण बच्चों की दिनचर्या को भी प्रभावित करते हैं जिसकी वजह से उनकी शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है।
समय के साथ कुछ बच्चों के अंगों में सूजन होना या पसीना आना ,रंग में परिवर्तन(सफ़ेद पड़ जाना या बैंगनी धब्बे पड़ जाना) इत्यादि हो सकता है।बच्चे प्रभावित अंग को इस्तेमाल नहीं करते व् उसको विभिन्न मुद्रा में रखते हैं।

३.४. इस रोग का निदान कैसे किया जाता है?

कुछ वर्ष पहले तक इस बीमारी को वभिन्नि नामों से जाना जाता था परन्तु अब इस बीमारी को सभी चकित्सिक काम्प्लेक्स रीजनल पेन सड्रिोम कहते हैं।इसके नदिान के लएि कई प्रकार के मानदंडों का प्रयोग कयिा जाता है।
इस बीमारी का नदिान बहुत हद्द तक इसके लक्षणों को पहचान कर कयिा जाता है जैसे शारीरकि जांच और वशिेष प्रकार का दर्द (जो तीव्र व् लम्बे समय तक रहने वाला होता है,जसिमें अंग का इस्तेमाल करने में तकलीफ रहती है,दवाओं का असर नहीं होता व् ऐलोडाईनआि होता है)
रोगी के द्वारा बताये गए व् चकित्सिक द्वारा देखे गए लक्षणों के संयोजन से इस बीमारी के नदिान के नष्किर्ष पर पहुंचा जा सकता है।इस के नदिान के लएि यह भी आवश्यक है की मरीज को ऐसी कोई भी बीमारी न हो जसिका इलाज बच्चों के चकित्सिक के द्वारा कयिा जाता हो।इसके बाद ही बच्चे को बच्चों के गठयिा रोग वशिेषज्ञ को मलिना चाहएि।लेबोरेट्री की जाँच साधारणतय ठीक होती है व् एम आर आई में हड्डी,जोड़ अथवा मांसपेशी में कोई वशिेष तकलीफ दखिाई नहीं देती।

३.५.इस बीमारी का इलाज कैसे करते है?
फ़ज़ियिोथेरेपस्टि व् ऑक्यूपेशनल थेरेपस्टि के नर्दिेशन में एक बेहतरीन व्यायाम के क्रम को करना इस बीमारी का मुख्य इलाज है।साइको थेरेपी का इस्तेमाल ज़रुरत पड़ने पर कयिा जा सकता है।इन सब के साथ या अलग से कुछ और चकित्सिा पद्दत भी इस्तेमाल की गयी है,जैसे अवसाद दूर करने की दवा,बायो फीड बैक,त्वचा के नीचे इलेक्ट्रकि नर्व स्टमिुलेशन व् व्यवहार संशोधन। इन सभी का नतीजा लगभग एक सा ही है।दर्द कम करने की दवा से आमतौर से कोई असर नहीं होता है। फलिहाल इस बीमारी के होने के कारन का पता लगाने व् उसी मुताबकि उसका इलाज करने पर फलिहाल अनुसन्धान चल रहा है। इस बीमारी का इलाज सबके लएि कष्टप्रद होता है: बच्चे,परविारजन व् इलाज करने वाली टीम।इस बीमारी के कारण होने वाली मानसकि चंता के लएि मनोवैज्ञानकि सलाह की आवश्यकता पड़ती है।इस बीमारी में इलाज तब नाकाम होता है जब परविारजन इसके नदिान को मान नहीं पाते व् इसके लएि सुझाये गए इलाज की सभी पध्दतयिों का पालन नहीं करते।

३.६. इस बीमारी का प्रोग्नोससि क्या होता है?
व्यस्कों की तुलना में बच्चों में इस बीमारी का प्रोग्नोससि बेहतर होता है।इसके साथ ही इस बीमारी से पीड़ति बच्चे व्यस्कों की तुलना में जल्दी ठीक हो जाते है।हालाँकि पूर्ण रूप से ठीक होने में समय लगता है व् यह अवधि प्रत्येक बच्चे में अलग होती है।समय पर नदिान व् इलाज से प्रोग्नोससि बेहतर होता है।

३.७. रोजमर्रा की दनिचर्या पर क्या प्रभाव होता है?
बच्चों को स्कूल जाने,नयिमति कसरत व् व्यायाम करने व् संगी साथयिों के साथ समय व्यतीत करने के लएि प्रोत्साहति करना चाहएि।